पाक्षिक समाचार

सम्पर्क

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली

खण्ड–XXX अंक–11

15 जून, 2025

भलेउ पोच सब बिधि उपजाए। गनि गुन दोष बेद बिलगाए।।
कहहिं बेद इतिहास पुराना। बिधि प्रपंचु गुन अवगुन साना।।

भले, बुरे सभी ब्रह्मा के पैदा किये हुए हैं, पर गुण और दोषों को विचार कर वेदों ने उनको अलग–अलग कर दिया है। वेद, इतिहास और पुराण कहते हैं कि ब्रह्मा की यह सृष्टि गुण–अवगुणों से सनी हुई है। **–श्रीरामचरितमानस/2**

स्वागत

- स्थापना अनुभाग-I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-4/2025/409927 दिनांक 04.06.2025 के अनुसार **प्रो. विकास निमेश** ने 02.06.2025 से संस्थान के स्कूल ऑफ पब्लिक पॉलिसी में सातवें वेतन आयोग के वेतन लेवल-11 में सहायक प्रोफेसर, ग्रेड-II के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

  प्रो. विकास निमेश को उनकी नियुक्ति के तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो) संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।

- स्थापना अनुभाग-I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-4/2025/408999 दिनांक 02.06.2025 के अनुसार **डॉ. अजय माथुर** ने 02.06.2025 से संस्थान के स्कूल ऑफ पब्लिक पॉलिसी में प्रोफेसर ऑफ प्रैक्टिस के रूप में तीन वर्ष की अवधि के लिए कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग-I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2025/411113 दिनांक 09.06.2025 के अनुसार **प्रो. अविनाश जैन** ने 02.06.2025 से संस्थान के प्रबंध अध्ययन विभाग में सातवें वेतन आयोग के वेतन लेवल-11 में सहायक प्रोफेसर, ग्रेड-II के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

  प्रो. अविनाश जैन को उनकी नियुक्ति के तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो) संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।

गेट/जैम - 2026 के अध्यक्ष/उपाध्यक्ष की नियुक्तियां

कुलसचिव कार्यालय से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/AREG/4(3)/2025/409402 दिनांक 03.06.2025 के अनुसार निदेशक महोदय ने 2026 के लिए निम्नलिखित संकाय सदस्यों को 01 जुलाई, 2025 से गेट/जैम के अध्यक्ष/उपाध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया है।

पदनाम	संकाय सदस्य का नाम
अध्यक्ष गेट/जैम - 2026	प्रो. विमलेश पंत वायुमण्डलीय विज्ञान केन्द्र
उपाध्यक्ष गेट/जैम - 2026	प्रो. शेख ज़िया अहमद जैव रासायनिक इंजीनियरी एवं जैव प्रौद्योगिकी विभाग
उपाध्यक्ष गेट/जैम - 2026	प्रो. जोसेमन जैकब पदार्थ विज्ञान एवं इंजीनियरी विभाग

राजभाषा हिन्दी के अनुसार राज्यों का वर्गीकरण

क्षेत्र क– बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, उत्तराखंड, राजस्थान और उत्तर प्रदेश तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र।

क्षेत्र ख– गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमन और दीव तथा दादरा और नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र।

क्षेत्र ग– खंड (1) और (2) में निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र।

आरोग्य स्वास्थ्य वार्ता श्रृंखला के तीसरे सत्र का समापन

आई.आई.टी. दिल्ली अस्पताल से प्राप्त विज्ञप्ति संख्या IITD/2025/KHOS दिनांक 10.06.2025 के अनुसार आई.आई.टी. दिल्ली अस्पताल और अकादमिक आउटरीच कार्यालय की पहल 'आरोग्य स्वास्थ्य वार्ता श्रृंखला' अपने तीसरे सत्र में **"मोतियाबिंद: कारण, लक्षण एवं आधुनिक उपचार"**, डॉ. अमित खोसला, मुख्य वक्ता (सीनियर कंसल्टेंट सर गंगा राम हॉस्पिटल) के विशेषज्ञ व्याख्यान के साथ 27 मई, 2025 को सफलतापूर्वक संपन्न हुई ।

इस सत्र में मोतियाबिंद से जुड़े महत्वपूर्ण पहलुओं पर चर्चा हुई, जिसमें शामिल थे:

- **मोतियाबिंद क्या है** ? – वे कैसे विकसित होते हैं और दृष्टि को कैसे प्रभावित करते हैं।
- **संकेतों को पहचानना** – शुरुआती लक्षण और कब मदद लेनी चाहिए।
- **जोखिम कारक और रोकथाम** – अपनी आँखों की सुरक्षा के लिए जीवनशैली की आदतें।
- **उन्नत उपचार विकल्प** – पारंपरिक सर्जरी से लेकर अत्याधुनिक लेजर तकनीक और प्रीमियम इंट्राओकुलर लेंस (IOL) तक।
- **प्रश्नोत्तर सत्र** – प्रतिभागियों ने विशेषज्ञ से अपने सवालों के जवाब प्राप्त किये।

इस सत्र को ज्ञानवर्धक एवं यादगार बनाने के लिए आरोग्य स्वास्थ्य वार्ता श्रृंखला के आयोजको ने सभी प्रतिभागियों, विशेषकर डॉ. खोसला का हृदय से आभार व्यक्त किया हैं।

स्थानांतरण

स्थापना अनुभाग–2 से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/Estt.2/2025/413688 दिनांक 16.06.2025 के अनुसार संस्थान के कार्यहित में तत्काल प्रभाव से निम्नलिखित कर्मचारियों का स्थानांतरण किया गया है।

क्र.सं.	कर्मचारी का नाम, कोड सं., पदनाम	विभाग/अनुभाग/एकक	
		अनुभाग से	अनुभाग में
1.	श्री सचिन कुमार (27051) उप प्रशासनिक अधिकारी	भंडार एवं क्रय अनुभाग	गेट कार्यालय
2.	श्री मनोज कुमार (26443) सहायक प्रशासनिक अधिकारी	गेट कार्यालय	भंडार एवं क्रय अनुभाग
3.	श्री मनोज सिंह (27297) प्रशासनिक सहायक	उपनिदेशक (प्रचालन) कार्यालय	जे.ई.ई. कार्यालय
4.	श्री धीरेंद्र राणा (27344) प्रशासनिक सहायक	छात्र कार्य अनुभाग	उपनिदेशक (प्रचालन) कार्यालय
5.	श्री मनीष (27618) प्रशासनिक सहायक	निदेशक कार्यालय	छात्र कार्य अनुभाग
6.	श्री मनोज (27535) प्रशासनिक सहायक	शैक्षणिक अनुभाग	सेन्स
7.	श्री शेखर कुमार ठाकुर (27850) प्रशासनिक सहायक	आई.आर.डी. लेखा	शैक्षणिक अनुभाग

संस्थान में ग्रीष्म सुरक्षा पूर्वोपाय

संरक्षा अधिकारी से प्राप्त सूचना के अनुसार सभी निवासियों, छात्रों और कर्मचारियों को सलाह दी जाती है कि वे गर्मी के मौसम में बिजली के उपकरणों का उपयोग करते समय सावधानी बरतें, क्योंकि ये उपकरण प्रयोगशालाओं, कार्यालयों, यू.पी.एस. रूम, छात्रावासों के कोल्ड रूम आदि में आग लगने की घटनाओं का प्रमुख कारण हैं। इससे बचने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जाए।

1. पंखे और एयर कंडीशनर (ए.सी.) का उपयोग केवल आवश्यकता अनुसार करें।
2. विद्युत उपकरणों का उपयोग करते समय हमेशा उन पर नज़र रखें और उपयोग न होने पर उन्हें बंद कर दें।
3. यू.पी.एस. यूनिट को अनावश्यक बिजली के भार और जोखिम से बचाने के लिए इस्तेमाल न होने पर बंद कर देना चाहिए।
4. गर्मी के मौसम में 70 से ज़्यादा बैटरियाँ रखने वाले यू.पी.एस. रूम में सही तापमान बनाए रखने के लिए क्षेत्र के अनुसार उचित रेटिंग वाला ए.सी. लगाने की सलाह दी जाती है और बाकी मौसम में एग्जॉस्ट सिस्टम का इस्तेमाल करें।
5. खराब सॉकेट, प्लग और तारों को तुरंत बदला जाना चाहिए और ठीक होने तक उनका इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।
6. लम्बे समय के लिए कमरे या परिसर से बाहर जाते समय बिजली के उपकरणों को कभी भी 'चालू' न छोड़ें।
7. सभी विभागाध्यक्षों को सलाह दी जाती है कि वे महत्वपूर्ण प्रयोगशालाओं और सर्वर रूम में एक अतिरिक्त ए.सी. लगाएँ ताकि निर्बाध कूलिंग के लिए वैकल्पिक संचालन व्यवस्था हो सके।
8. किसी भी आपात स्थिति में तत्काल सम्पर्क के लिए प्रभारी अधिकारी और लैब तकनीशियन/कार्यालय अधीक्षक अपने कमरों के दरवाजों पर मोबाइल नंबर स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करें।
9. हाल ही में यह पाया गया है कि आग लगने की स्थिति में एम.सी.बी. ट्रिप नहीं करता है अतः संस्थान के इंजीनियरों से अनुरोध है कि वे सुनिश्चित करें कि सभी विद्युत फिटिंग सही हैं और ऑटो कट–ऑफ सिस्टम ठीक से काम कर रहा है और इसकी समय–समय पर जांच की जानी चाहिए।
10. ए.सी. सर्विस मैकेनिक्स पर कड़ी निगरानी रखी जानी चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि कोई ढीला तार न हो और ए.सी. वॉटर आउटलेट पाइप के साथ आउटडोर/इनडोर इलेक्ट्रिकल लीड को लपेटा न गया हो।
11. शॉर्ट सर्किट या ओवरहीटिंग से बचने के लिए बिजली के उपकरणों की वायरिंग में किसी भी तरह का जोड़ न लगाएं।
12. अग्निशमन अधिकारियों को यह सुनिश्चित करने के लिए निर्देशित किया जाना चाहिए कि सभी अग्नि सुरक्षा व्यवस्थाओं की जांच कर ली गई हैं और यह काम कर रही हैं।
13. सभी से अनुरोध है कि वे आपातकालीन स्थिति में निकास व्यवस्था को सुनिश्चित करें। निकास द्वार के सामने या पास कोई बाधा नहीं होनी चाहिए।

आरोग्यम् परमम् भाग्यम्

मोटे अनाज का गढ़ बनता भारत

मोटे अनाजों पर यह कहावत पूरी तरह चरितार्थ होती है कि 'पुरूष बली नहीं होत है, समय होत बलवान।' हरित क्रांति के दौर में जो मोटे अनाज गरीबों की थाली तक सिमट गए थे, आज वे विदेशी मेहमानों की थाली में परोसे जा रहे हैं। हाल में संपन्न जी–20 शिखर सम्मेलन और उसके पहले देश भर में हुई इस समूह की अन्य बैठकों में मेहमानों के स्वागत से लेकर होटल के खाने–पीने तक हर जगह देसी टच दिया गया। विदेशी नेताओं को मोटे अनाज जैसे–ज्वार, बाजरा और रागी से बने पकवान परोसे गए। विदेशी मेहमानों ने मोटे अनाज से बने स्नैक का लुत्फ देसी चाय के साथ उठाया। इससे भारत के मोटे अनाजों की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ब्रांडिंग भी हुई। मोटे अनाजों के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए 2023 को 'इंटरनेशनल ईयर आफ मिलेट्स' घोषित किया गया हे। इससे पहले 2018 में भारत ने राष्ट्रीय स्तर पर मोटा अनाज वर्ष मनाया था। मिलेट्स में मोटे एवं छोटे दानों वाले अनाज शामिल होते हैं। प्रमुख मोटे अनाजों में ज्वार, बाजरा, रागी का नाम आता है तो वहीं छोटे अनाजों में कुटकी, कांगनी, कोदो और सावां शामिल हैं। इनमें कैल्शियम, आयरन और फाइबर समेत ढेरों पोषक तत्व पाए जाते हैं। इसलिए मोटे अनाजों को सुपरफूड का दर्जा दिया गया है।

आज मोटे अनाज आकर्षक पैकिंग में बड़े–बड़े शापिंग माल में बिक रहे हैं। दुनिया के कई देशों में इन अनाजों को

बड़े चाव से खाया जाता है। पोषक तत्वों की भरपूर मौजूदगी और बीमारियों से लड़ने की अद्भुत क्षमता को देखते हुए मोटे अनाज देश की पोषण सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है। इसीलिए चिकित्सा जगत मोटे अनाजों को भोजन में शामिल करने की पैरवी कर रहा है। अब सरकार ने भी मोटे अनाजों से बने प्रसंस्कृत उत्पादों को नाश्ते और भोजन की थाली में शामिल करने की योजना बनाई है। प्रसंस्कृत उत्पादों को स्थानीय लोगों की उम्र एवं स्वाद के अनुरूप बनाया जाएगा। उल्लेखनीय है कि देश की 42 प्रतिशत जनसंख्या का मुख्य आहार स्टार्च युक्त भोजन है और 60 करोड़ लोग गंभीर रूप से कुपोषित हैं। मोटे अनाज से बने आहार को भोजन में शामिल करने से कुपोषण की समस्या का स्वतः समाधान हो जाएगा। स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद होने के कारण मोटे अनाज अब दुनिया भर में भोजन का हिस्सा बन रहे हैं। कई देशों ने गेहूं के स्थान पर मोटे अनाजों को अपने रूटीन भोजन में स्थान दिया है। मोटे अनाज में आयरन की अच्छी मात्रा होती है। ये ग्लूटेन फ्री होने के कारण शरीर के लिए फायदेमंद होते हैं और इससे डयबिटीज जैसी बीमारी को नियंत्रित करने में भी बड़ी मदद मिलती है।

गत वर्ष भारत ने 75.4 करोड़ डालर का मोटा अनाज निर्यात किया, जिसे 2025 तक सौ करोड़ डालर करना है।

मोटे अनाजों की खेती अधिकतर छोटे एवं सीमांत किसान करते हैं। अब नए उद्यमी इन किसानों से जुड़कर मोटे अनाजों को आम जनता की थाली तक पहुंचाने में जुटे हैं। मोटे अनाजों को उगाने के लिए कम पानी की जरूरत पड़ती है और उनकी फसलें मौसमी उतार–चढ़ाव को आसानी से झेल लेती हैं। ये कार्बन अवशोषण में सहायक हैं। गेहूं–धान की तुलना में इन फसलों के तैयार होने की अवधि भी कम है। इसीलिए जलवायु परिवर्तन के दौर में मोटे अनाज उम्मीद की किरण जगाते हैं।

प्रधानमंत्री मोदी मन की बात कार्यक्रम में किसानों की आय बढ़ाने मे मोटे अनाजों की भूमिका का उल्लेख कर चुके हैं। उन्होंने इसे एक आंदोलन बनाने और भारत को मिलेट्स का ग्लोबल हब बनाने की भी वकालत की है। इसी कड़ी में संसद भवन की कैंटीन में मोटे अनाज से बने व्यंजनों को शामिल किया गया है। मोटे अनाज के पौष्टिक गुणों को देखते हुए 50 साल बाद सैनिको के आहार में मोटे अनाज की वापसी हुई है। उत्तरप्रदेश की योगी सरकार मोटे अनाजों की प्रसंस्कृत इकाइयां लगाने वालों को 100 प्रतिशत अनुदान दे रही है। मंडियों में मोटे अनाजों के लिए अलग से बिक्री केंद्र बनाए जाएंगे। ग्राम्य विकास विभाग इसे ब्लाक से लेकर ग्राम पंचायतों एवं वहां के हाट बाजारों तक विस्तार देगा। इनसे बने भोजन होटलों के खानपान में शामिल किए जाएंगे। बच्चों को भी मोटे अनाजों के बारे में जानकारी हो, इसके लिए मोटे अनाजों को प्राइमरी स्कूलों के पाठ्यक्रम में शामिल किया जाएगा। मध्याह्न भोजन, पुष्टाहार, सार्वजनिक वितरण प्रणाली में मोटे अनाज शामिल कर लिए गए हैं। स्वयं सहायता समूहों को मोटे अनाजों के उत्पाद तैयार करने के लिए प्रशिक्षित किया जाएगा। जलवायु परिवर्तन के कारण गेहूं, धान की खेती में बढ़ती कठिनाइयों और लागत को देखते हुए सरकार समर्थन मूल्य पर मोटे अनाजों की देशव्यापी सरकारी खरीद और उन्हें सार्वजनिक वितरण प्रणाली के तहत वितरित करने की योजना पर काम कर रही है।

दुनिया के 130 देशों में मोटे अनाजों की खेती होती है और ये अनाज एशिया–अफ्रीका के 50 करोड़ लोगो के पारंपरिक आहार हैं। अब मोदी सरकार मोटे अनाजों को वैश्विक ब्रांड बना रही है। इसके लिए विश्व के कई देशों में मोटे अनाज आधारित प्रदशर्नियां आयोजित की जा रही हैं। नाबार्ड ने मोटे अनाजों के निर्यात को बढ़ावा देने की कार्ययोजना तैयार की है। इसके लिए उसने कृषि, ग्रामीण स्टार्टअप के लिए 600 करोड़ रूपये का कैपिटल फंड बनाया है। इसका इस्तेमाल मोटे अनाज आधारित स्टार्टअप को बढ़ावा देने के लिए किया जा रहा है। इसके लिए नावार्ड ने 'नबवेंचर' नामक कंपनी बनाई है। वित्त वर्ष 2022–23 में भारत ने 75.4 करोड़ डालर का मोटा अनाज निर्यात किया है, जिसे 2025 तक बढ़ाकर 100 करोड़ डालर करने का लक्ष्य है। भारत अपने मोटे अनाज निर्यात का 55 प्रतिशत संयुक्त अरब अमीरात और सऊदी अरब को करता है। इन सब कदमों का आने वाले वर्षों में सकारात्मक असर दिखेगा।

साभार –दैनिक जागरण
दिनांक 22.09.2023

हिन्दी कक्ष द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित दूरभाषः EPABX 7144

मुद्रकः सागर प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, नई दिल्ली। ई–मेलः sagarprinters@gmail.com